

भारत की दहाड़... आत्मनिर्भरता की मिसाल



PLI योजनाओं से बदले हालात

- ₹23.8 लाख करोड़ का उत्पादन/बिक्री
- ₹15.5+ लाख करोड़ का निर्यात
- 14.6 लाख लोगों को मिला रोजगार

मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में भारत की बड़ी छलांग

- देश में इस्तेमाल होने वाले 99.2% मोबाइल फोन अब भारत में बनते हैं
- इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग 2014 के ₹1.90 लाख करोड़ से लगभग 6 गुना बढ़कर ₹13.11 लाख करोड़ हुई, जिससे 25+ लाख रोजगारों का सृजन हुआ
- डिफेंस प्रोडक्शन 2014 के ₹46,400 करोड़ से 280% से अधिक बढ़कर ₹1.78 लाख करोड़ हुआ

देश की पहचान से जुड़ा स्टार्टअप शब्द

- 2.5 लाख से अधिक स्टार्टअप्स
- इनमें से लगभग 50% टियर-2 और टियर-3 शहरों से
- स्टार्टअप्स से 25 लाख से ज्यादा रोजगार सृजित

12 साल



सेल्फ-रिलायंट. स्किल्ड. फ्यूचर-रेडी.

बड़ी सोच, ऊंची उड़ान

- 2014 के \$468 बिलियन के मुकाबले निर्यात 84% बढ़कर \$863 बिलियन हुआ
- ₹43 लाख करोड़ के इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के कारण हो रहे नए निवेश आकर्षित
- भारत सरकार द्वारा 20 इंडस्ट्रियल स्मार्ट सिटीज़ को मंजूरी
- 2025-26 में 1.40+ लाख पेटेंट फाइल किए गए, जो दो दशकों में सर्वाधिक है

हर उत्पाद के लिए बाज़ार

- वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ODOP) के तहत 773 जिलों के 1,244 खास उत्पादों का चयन और कारीगरों को मदद
- ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) के जरिये 470+ करोड़ ऑर्डर हुए, छोटे उद्यमों को मिला बढ़ावा

“अब भारत चिप से लेकर शिप तक,
निर्माण की एक नई गाथा लिख रहा है।”

- नरेन्द्र मोदी



खबर संक्षेप

कोलकाता: अडाणी, सुवेंदु ने अस्पताल की नींव रखी

कोलकाता। अडाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने कोलकाता के पास न्यू टाउन क्षेत्र में बनने वाले 2,000 बिस्तरों वाले अस्पताल की आधारशिला रखी। अस्पताल का निर्माण अडाणी समूह करेगा। गौतम ने अपनी पत्नी और अदाणी फाउंडेशन की प्रमुख प्रीति अदाणी, बेटे एवं अदाणी फाउंडर्स के प्रबंध निदेशक करण अदाणी तथा मुख्यमंत्री के साथ ‘अडाणी आरोग्य मंदिर’ के लिए भूमि पूजन किया। दोनों ने चिकित्सा सुविधा की पट्टिका का अनावरण किया। अस्पताल का निर्माण न्यू टाउन के एक्शन एरिया-2 में 51 एकड़ जमीन पर किया जा रहा है। सुवेंदु ने घोषणा की थी कि अस्पताल के आधे बिस्तर गरीब मरीजों के लिए आरक्षित होंगे।

फिरोजपुर स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी

फिरोजपुर। पंजाब के फिरोजपुर में एक सरकारी कन्या स्कूल को गुरुवार को अज्ञात ईमेल के जरिए बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद पुलिस ने परिसर खाली कराया और तलाशी अभियान चलाया।

अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने कहा कि स्कूल की आधिकारिक ईमेल आईडी पर एक अज्ञात ईमेल अकाउंट से धमकी भरा मेल भेजा था।

ठाणे में 2.84 लाख की नकली दवा संग 2 अरेस्ट

ठाणे। महाराष्ट्र के ठाणे शहर में पुलिस ने नकली दवाओं के कारोबार का भंडाफोड़ करते हुए 2.84 लाख मूल्य की विभिन्न दवाएं जब्त की हैं। इस मामले में 2 लोगों को हिरासत में लिया गया है। दवा कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी की शिकायत के आधार पर पुलिस ने 21 सितंबर को वागले एस्टेट इलाके में मुंबई निवासी एक व्यक्ति को पकड़ा।

एससी-एसटी एक्ट में अजीत की जमानत अर्जी खारिज नई दिल्ली।

दिल्ली हाई कोर्ट ने यूट्यूबर अजीत भारती को उनके खिलाफ एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज किए गए मामले में जमानत देने से इनकार कर दिया है। जस्टिस सौरभ बनर्जी ने यह फैसला सुनाया और उनकी जमानत को खारिज कर दिया। जस्टिस बनर्जी ने कहा कि पहली नजर में भारती के खिलाफ इस एक्ट में अपराध सिद्ध होता है।

नंदीग्राम:कांग्रेस प्रत्याशी को कोर्ट ने दी जमानत कोलकाता।

कोलकाता। कलकत्ता हाईकोर्ट ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल में होने वाले उपचुनाव से पहले नंदीग्राम से कांग्रेस उम्मीदवार मिलन प्रधान को जमानत दे दी।अदालत ने कहा कि पुलिस इस मामले में उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकती। कोर्ट ने प्रधान को चुनाव लड़ने की भी इजाजत दे दी है। कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस सौगत ने कहा कि जांच अधिकारी ने 19 साल बाद कार्रवाई की है।

मोड़ना ने दी सीईसी के खिलाफ शिकायत

नई दिल्ली। सांसद महुआ मोड़ना ने बृहस्पतिवार को यहां संसद मार्ग थाने में मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई, और प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की। यह शिकायत उन खबरों के आधार पर की गई है जिनमें कहा गया है कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया के दौरान दो निर्वाचन आयुक्तों ने निर्वाचन आयोग के कई फैसलों पर आपत्ति जताई थी।

ईडी की रेड के खिलाफ आप का प्रदर्शन

- ईडी अधिकारियों से जुड़ी एक कार के शीशे तोड़े
- गाड़ी के टायर पंचर किए बिल्डिंग पर पत्थर मारे

भाषा ►► मोहाली

धनशोधन जांच के तहत प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से की जा रही छापेमारी की कार्रवाई के बीच आप कार्यकर्ताओं ने बृहस्पतिवार को यहां जीएमएडीए कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। कुछ प्रदर्शनकारियों ने ईडी अधिकारियों से जुड़ी एक कार के शीशे तोड़ दिए और टायर पंचर कर दिए। प्रदर्शन कर रहे 'आप' कार्यकर्ता पुलिस बैरिकेड तोड़कर ग्रेटर मोहाली क्षेत्र विकास प्राधिकरण (जीएमएडीए) परिसर में प्रवेश कर गये, जबकि वहां पंजाब पुलिस के जवान तैनात थे। पंजाब में सत्ताहड़ 'आप' ने ईडी की कार्रवाई के विरोध में प्रदर्शन किया। पार्टी ने भाजपा नीत केंद्र सरकार पर केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है।

पंजाब पुलिस से धक्कामुक्की, सीआरपीएफ ने रोके



मोदी के इशारे पर पंजाब में 'विशेष डकैत' तैनात किए गए, ईडी छापों को लेकर सिसोदिया ने निशाना साधा



चंडीगढ़ (भाषा)। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता मनोष सिसोदिया ने पंजाब में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी को लेकर बृहस्पतिवार को भाजपा नीत केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री मोदी पर तीखा हमला किया और आरोप लगाया कि मोदी पंजाब को 'परेशान' करने के लिए दिल्ली से 'विशेष प्रकार के डकैत' लेकर आए हैं, जिन्हें ईडी अधिकारी कहा जाता है। सिसोदिया ने आरोप लगाया कि मोदी यह समझ गए हैं कि भाजपा मतों के जरिये पंजाब नहीं जीत सकती इसीलिए वह ईडी के जरिये राज्य को 'कब्जाना' चाहते हैं। ईडी ने मंगलवार को धन शोधन की जांच के तहत मोहाली में ग्रेटर मोहाली एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमएडीए) के कार्यालयों, आवास एवं शहरी विकास विभाग के प्रधान सचिव विकास गर्ग और दिल्ली की एक रियल्टी कंपनी के परिसरों में सर्वेक्षण एवं तलाशी अभियान चलाया था।

बरेली में अग्निवीर भर्ती में फर्जीवाड़ा यूपी पुलिस ने पांच को किया गिरफ्तार

आरोपियों से छह मोबाइल, कूटरचित्त दस्तावेज व फर्जी आधार बरामद

- शारीरिक माप-तौल और मेडिकल में पास कराने का अभ्यर्थियों को देते थे झांसा

भाषा ►► बरेली

बरेली के कैट थानाक्षेत्र में पुलिस ने सेना अग्निवीर भर्ती में अभ्यर्थियों को शारीरिक माप-तौल और मेडिकल में पास कराने का झांसा देकर रुपये छूटने वाले गिरोह का पर्दाफाश कर उसके पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार आरोपियों के कब्जे से छह फोन, 9,100 रुपये नकद, एक बाइक, एक स्कूटी, कूटरचित्त दस्तावेज और फर्जी आधार कार्ड बरामद किए गए हैं। पुलिस अधीक्षक (नगर) मानुष पारीक ने बताया कि यह कार्रवाई बुधवार को जाट रेजीमेंट सेंटर के हरमजन गेट के पास की गई तथा गिरफ्तार आरोपियों की पहचान प्रदीप कुमार शर्मा, विशाल यादव, राजवीर उर्फ कलाला, धर्मेन्द्र सिंह और नूर अहमद के रूप में हुई है। गिरोह का एक सदस्य आसिफ फरार है। पुलिस के मुताबिक पृष्ठताछ से पता चला है कि प्रदीप कुमार शर्मा चौबारी में 'दैक्षित डिफेंस एकेडमी' के नाम से 'फिजिकल कोचिंग' चलाता है। वह अनफिट होने की आशंका वाले अभ्यर्थियों को अपने जाल में फँसाता था।



बरेली। पुलिस की गिरफ्त में पांचों आरोपी।

खुद को सेना का बड़ा अधिकारी बताकर पेश करता था आरोपी

पुलिस के अनुसार विशाल यादव पूर्व में लखनऊ सेंटर में मेडिकल कोर में सफाईकर्मी रह चुका है, इसी अनुभव का फायदा उठाकर अभ्यर्थियों को अपने विश्वास में लेता था। पुलिस के मुताबिक नूर अहमद खुद को सैन्य अस्पताल का 'काउंसेलर' बताकर बड़े अधिकारियों से पहचान होने का दावा करता था। पुलिस का कहना है कि गिरोह का सदस्य आसिफ अभ्यर्थियों के सामने खुद को सेना का बड़ा अधिकारी बताकर पेश करता था, फलस्वरूप अभ्यर्थी उसके झांसे में आ जाते थे। अभ्यर्थियों के चयन के बाद गिरोह के

सदस्य रुपये आपस में बांट लेते थे। पुलिस के अनुसार आरोपियों के मोबाइल फोन की जांच में व्हाट्सएप चैट, मेडिकल अनफिट प्रमाण पत्र, एडमिट कार्ड के स्क्रीनशॉट और ऑनलाइन लेनदेन से जुड़े साक्ष्य मिले हैं। एक स्कूटी की डिग्री से अलग-अलग नाम और जन्मतिथि वाले आधार कार्ड की प्रतियां, भर्ती कार्यक्रम की प्रतियां और मेडिकल संबंधी दस्तावेज भी बरामद हुए। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। मामले की जांच की जा रही है

दिल्ली में फिर नाबालिग से रेप, आरोपी फरार

मेडिकल जांच के आधार पर मुकदमा दर्ज

एजेंसी ►► नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी में रेप की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। 12 दिनों में नाबालिग से रेप का यह चौथा मामला सामने आया है। दिल्ली के वजीराबाद थाना इलाके के संगम विहार में एक होटल में नाबालिग लड़की के साथ रेप की वारदात हुई है। वजीराबाद थाना पुलिस ने पीड़िता के बयान और मेडिकल जांच के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। यह मामला 21 सितंबर की रात का है। पुलिस ने इस मामले में 22 सितंबर को केस

बारह दिनों में नाबालिग से रेप का चौथा मामला

दर्ज किया है। पीड़िता और आरोपी दोनों वजीराबाद के रहने वाले हैं। दोनों की दोस्ती सोशल मीडिया के जरिए हुई थी। आरोप है कि आरोपी दोस्ती के बहाने नाबालिग को संगम विहार स्थित होटल में ले गया और वहां वारदात को अंजाम दिया। घटना के बाद पीड़िता घर पहुंची और परिवार को पूरी बात बताई, जिसके बाद परिवार ने पुलिस को सूचना दी। वजीराबाद थाना पुलिस मौके पर पहुंची और पीड़िता के बयान और मेडिकल जांच के आधार पर पोक्सो एक्ट सहित संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया।

कमर—पेड़ू में दर्द, खून की कमी, कमजोरी, हथेली—तलवों में जलन, हार्मोन्स असंतुलन, चिड़चिड़ापन आदि में सहायक

“90 वर्षों से No.1 वुमन हेल्थ टॉनिक”

हेमपुष्पा

Helpline: 011-23261111, rajvaidyacare@gmail.com

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आदेश पर कार्रवाई प्रयागराज में जातिगत भेदभाव मामले में जांच समिति गठित



प्रयागराज लॉ यूनिवर्सिटी के एलएलबी छात्र और एक पीएचडी शोधार्थी ने दायर याचिका की थी याचिका

दोनों छात्र विवि के छात्रावास में रहते हैं

एक याची विश्वविद्यालय में पीएचडी शोधार्थी हैं, जबकि दूसरा एल.एल.बी. (ऑनर्स) पाठ्यक्रम के पांचवें सेमेस्टर का छात्र है। दोनों छात्र विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहते हैं। आरोप लगाए गए हैं कि विधि विभाग के अध्यक्ष व हॉस्टल वार्डन ने अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर उनका जातिगत अपमान किया। उन्हें शक है कि उनकी परीक्षाओं में उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन जाति के आधार पर अधिक सख्ती से किया गया है। छात्रों की याचिका पर इलाहाबाद हाई कोर्ट में जस्टिस विनोद दीवाकर की एकल पीठ ने सुनवाई की। याचिका में कहा गया था कि छात्र ने पहले कुलपति के समक्ष शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन बार-बार याद दिलाने के बावजूद डॉ. शर्मा के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई।

आईआईटी-बॉम्बे सुसाइड केस पीड़ित परिजन भूख हड़ताल पर बैठे



मुंबई। आईआईटी बॉम्बे के छात्र साहिल वाकोडे की मौत मामले में उसके माता-पिता रवींद्र और सोनाली गुरुवार को मुंबई के आजाद मैदान में भूख हड़ताल पर बैठ गए। साहिल के पिता रवींद्र ने आरोप लगाया कि उनके बेटे ने संस्थान में बार-बार जातिगत भेदभाव का सामना करने की बात बताई थी। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने मेरे बेटे को प्रताड़ित किया, उन्हें जेल में डालना चाहिए। इससे पहले राहुल गांधी ने दोनों से वीडियो कॉल पर बात की और उन्हें मदद का भरोसा दिया। दोनों ने राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष से भी मुलाकात की और बेटे की मौत की जल्द जांच की मांग करते हुए ज्ञापन सौंपा। 22 साल का साहिल आईआईटी बॉम्बे के एनजी साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग में बीटड सेकंड ईयर का छात्र था। 18 सितंबर को शाम वह हॉस्टल के कमरे में मृत मिला।

तेलंगाना: रेड में मिले नोटों के बंडल आठ ठिकानों पर ताबड़तोड़ छापेमारी



हैदराबाद। तेलंगाना एंटी-कorrप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने सस्पेंड किए गए डीएसपीसंकोरेड्डी भीम रेड्डी के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति के मामले में जांच तेज कर दी है। जांचकर्ताओं ने ऐसे कई लोगों की पहचान की है, जिनके पास कथित तौर पर इस अधिकारी से जुड़ी संपत्तियां होने का शक है। एसीबी ने 8 संदिग्ध बेगमोंदारों की पहचान की है और उनके ठिकानों पर रेड मारी। एसीबी की टीमें हैदराबाद के पुप्पलागुड़ा और अन्य इलाकों में तलाशी ले रही हैं। तलाशी गंगासांनी श्रीधर की देखरेख में हो रही है। छापेमारी में बड़े पैमाने पर कैश नजर आ रहा है। एसीबी संदिग्ध बेगमों संपत्तियों के मालिकाना हक और मनी ट्रेल का पता लगाया जा सके।

यूपी में बेटे ने पिता की ईंट से सिर कुचलकर कर दी हत्या

हमीरपुर (उप्र)। हमीरपुर सदर कोतवाली क्षेत्र के पाराउंडी गांव में बुधवार देर रात एक व्यक्ति ने कथित तौर पर इलाज के लिए पैसे नहीं देने पर बेटे की वारदात की ईंट से सिर कुचलकर हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार मुताबिक पाराउंडी में नवाब अली (75) अपने पांच पुत्रों के साथ रहते थे, उनका एक बेटा शमशाउद्दीन ग़ाम प्रधान है, जबकि दो बेटे मूक बधिर हैं एवं सबसे छोटा बेटा रमजान (35) टीबी से लंबे समय से ग्रस्त है। पुलिस के अनुसार रमजान बीमारी के इलाज के लिए अपने पिता नवाब अली से किसान केडिट से पैसे निकाल कर देने की मांग रहा था, पैसे नहीं मिलने पर बुधवार देर रात उसने गुर्रसे में आकर अपने पिता की ईंट से कुचलकर हत्या दी।

छगन भुजबल 11 साल पुराने भ्रष्टाचार के मामले में बरी

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और एनसीपी नेता छगन भुजबल को कलिंगा लाइब्रेरी से जुड़े एंटी कorrप्शन ब्यूरो (एसीबी) के आखिरी मामले से भी बरी कर दिया गया। भुजबल पर आरोप था कि उन्होंने मुंबई यूनिवर्सिटी की कलिंगा में मौजूद एक अहम जमीन का टुकड़ा लाइब्रेरी बनाने के लिए सरकार को दिया था। इस मामले में आरोप थे कि छगन भुजबल के नेतृत्व वाले पीडब्ल्यूडी विभाग ने कथित तौर पर 2009 में कुल चार एकड़ जमीन के एक हिस्से पर लाइब्रेरी बनाने के लिए टेंडर जारी किए थे और बाकी जमीन एक डेवलपर को 99 साल के लिए 1 रुपये प्रति वर्ग मीटर की दर से लीज पर दे दी थी। इसे एसीबी ने गैर कानून बताया था। इस मामले में वकील सुदर्शन खवारे ने छगन भुजबल का पक्ष रखा। कुछ अन्य लोगों को भी बरी कर दिया गया है। स्पेशल कोर्ट ने गया कि इसमें कोई अवैध कमाई नहीं हुई और व ही कोई 'विचद प्रो वको'(लेन-देन या बदले में कुछ पाने की बात) हुई।

टैरिफ संघर्ष विराम बढ़ाने, दुर्लभ मृदा और एआई जैसे मुद्दों पर बातचीत संभव

शी की अमेरिका यात्रा में तनाव घटाने पर जोर

एजेंडे पर संभावित मुद्दे

युद्धविराम विस्तार : वर्तमान समझौते के 10 नवंबर को समाप्त होने से पहले बातचीत करना। महत्वपूर्ण खनिज और दुर्लभ मृदा : चीन के आपूर्ति प्रतिबंधों और आपूर्ति शृंखला प्रभुत्व को खत्म करने के अमेरिकी प्रयासों का प्रबंधन करना। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) : जोखिम-प्रबंधन संवाद स्थापित करना और सुरक्षा सहयोग और प्रतिस्पर्धा को संबोधित करना। भू-राजनीतिक तनाव : ताइवान की स्थिति और ईरान व रूस से जुड़े संघर्ष से जुड़े ऊर्जा व्यवधानों सहित क्षेत्रीय तनावों को संबोधित करना। व्यापार प्रतिबद्धताएं : यूएस के लिए आर्थिक नीत की पेशकश करने के लिए चीन द्वारा संभावित कृषि व ऊर्जा खरीद पर चर्चा करना।



वैश्विक स्थिरता और द्विपक्षीय संबंधों के लिए निहितार्थ

अस्थायी शांति अस्थिर प्रदान करता है जो तत्काल तनाव को रोकता है, जबकि मुख्य संरचनात्मक घर्षण अनसुलझ रहते हैं। वैश्विक बाजार : दीर्घकालिक टैरिफ प्रक्षेपकों के बारे में निकट-अवधि के बाजार की अनिश्चितता को जीवित रखता है, हालांकि तत्काल व्यापार झटके टल जाते हैं। क्षेत्रीय और आपूर्ति शृंखला प्रभाव : पूर्वावलोक्यता प्रदान करता है जो वैश्विक ऊर्जा और द्विदिनामी आपूर्ति शृंखलाओं को स्थिर करने में मदद करता है, जिससे गंभीर आर्थिक अस्थिरता कम होती है।

अपेक्षित परिणाम

सीमित उपलब्धियां : व्यापक भू-राजनीतिक या आर्थिक रीसेट के बजाय अनुकूल छवि पेश करना। अस्थायी विस्तार : मामूली कृषि या ऊर्जा खरीद प्रतिज्ञाओं के साथ-साथ टैरिफ संघर्ष विराम का अल्पकालिक विस्तार सुरक्षित करना। संरचित संवाद : एआई सुरक्षा और द्विपक्षीय आर्थिक परामर्शों के लिए औपचारिक कार्य सत्रों या रुपरखाओं की शुरुआत करना। पारस्परिक यात्राएं : आगामी अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शिखर सम्मेलनों में संभावित अनुवर्ती बैठकों को आधार तैयार करना।

सीईसी के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का ऐलान

ज्ञानेश कुमार का 48 घंटे में इस्तीफा नहीं तो जंतर मंतर 2.0 शुरू होगा

एजेंसी ►► नई दिल्ली

काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का ऐलान कर दिया है। सीजेपी के प्रमुख अभिजीत दीपक ने गुरुवार को दिल्ली में घोषणा की कि यदि ज्ञानेश कुमार ने 48 घंटों में इस्तीफा नहीं दिया तो पूरे देश में चुनाव आयोग के खिलाफ मुहिम चलाई जाएगी। इसके बाद दिल्ली में जंतर-मंतर 2.0 भी चलाया जाएगा। सीजेपी ने चुनाव आयोग और



सरकार के सामने तीन मांगें रखीं हैं। सीजेपी के राष्ट्रीय संयोजक अभिजीत दीपक और दो सह संयोजक सौरभ दास-आशुतोष रॉका ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान ज्ञानेश कुमार, भाजपा, केंद्र सरकार और यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट पर भी प्रहार किया।

चिंतन

महंगाई पर राहत, लेकिन जमाखोरी पर सख्ती जरूरी

त्यो हारी सीजन में केंद्र सरकार ने तेल आयात शुल्क में कटौती कर खाद्य तेलों की बढ़ती कीमतों से परेशान आम उपभोक्ताओं को कुछ राहत दी है। इससे रसोई का बजट कुछ कम होगा। सरकार ने कूड सोयाबीन और कूड पाम ऑयल पर मूल सीमा शुल्क 10% से घटाकर 5% कर दिया है। कूड सूरजमुखी तेल पर आयात शुल्क पूरी तरह खत्म कर दिया है। वहीं, रिफाईंड सोया और पाम ऑयल पर शुल्क 32.5% से घटाकर 27.5% तथा रिफाईंड सूरजमुखी तेल पर 32.5% से घटाकर 22.5% किया है। इसका मकसद आयात लागत कम करके घरेलू बाजार में खाद्य तेलों की उपलब्धता बढ़ाना और कीमतों पर दबाव कम करना है। सरकार का यह कदम ऐसे समय आया है, जब खाद्य कीमतों को लेकर चिंता बनी हुई है। अगस्त में खुदरा महंगाई 4.82% रही, जबकि खाद्य महंगाई 5.95% तक पहुंच गई। थोक मूल्य सूचकांक में खाद्य महंगाई इससे भी अधिक 7.1% रही। महंगाई के इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि खाद्य वस्तुओं की कीमतों का दबाव पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। ऐसे में खाद्य तेलों पर आयात शुल्क में कमी उपभोक्ताओं के लिए राहत का माध्यम बन सकती है। भारत खाद्य तेल की अपनी जरूरत का एक बड़ा हिस्सा आयात से पूरा करता है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में पाम, सोया और सूरजमुखी तेल की कीमतों में होने वाला उतार-चढ़ाव सीधे घरेलू बाजार को प्रभावित करता है। इसके अलावा रुपये की विनियम दर भी आयात लागत पर असर डालती है। कमजोर रुपया विदेशी बाजार से तेल खरीदना महंगा कर सकता है। ऐसे माहौल में आयात शुल्क में कमी से आयातकों की लागत घटने की संभावना है और इसका लाभ आम उपभोक्ताओं तक पहुंच सकता है। यहीं सबसे महत्वपूर्ण सवाल खड़ा होता है कि शुल्क में कमी का वास्तविक लाभ आम आदमी को कब और कितना मिलेगा? सरकार ने आयात पर शुल्क घटा दिया, मगर बाजार में खुदरा कीमतें उसी अनुपात में कम हों, यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है। इसलिए सरकार को कीमतों की पूरी आपूर्ति श्रृंखला पर नजर रखनी होगी। खासकर त्योहारों के इस मौसम में जमाखोरी और कालाबाजारी पर सख्ती जरूरी है। मांग बढ़ने के समय यदि कारोबारी कृत्रिम कमी पैदा करके स्टॉक रोकते हैं तो बाजार में कीमतें फिर बढ़ सकती हैं। खाद्य तेल की कीमतों का असर केवल रसोई तक सीमित नहीं रहता। पाम और सोया तेल का इस्तेमाल नमकीन, बिस्कुट, पैकेज्ड खाद्य पदार्थों और बाहर के भोजन में बड़े पैमाने पर होता है। इसलिए तेल महंगा होने पर कई दूसरी वस्तुओं की कीमत भी प्रभावित होती है। हालांकि, आयात शुल्क में कटौती तत्काल राहत दे सकती है, लेकिन स्थायी समाधान घरेलू जिलहन उत्पादन बढ़ाने में ही है। सरसों, सोयाबीन, मूंगफली और सूरजमुखी जैसे तिलहनों का उत्पादन बढ़ाकर देश को आयात पर निर्भरता कम करनी होगी। महंगाई के खिलाफ लड़ाई केवल सरकारी घोषणाओं से नहीं जीती जा सकती। इसके लिए उत्पादन से लेकर आयात, थोक बाजार और खुदरा बिस्ी तक पूरी व्यवस्था पर नजर रखनी होगी। खाद्य तेलों पर शुल्क कटौती एक सकारात्मक पहल है, लेकिन इसकी सफलता का पैमाना यही होगा कि इसका लाभ आम उपभोक्ता की रसोई तक जल्दी पहुंचे। सरकार को जहां एक ओर आयात लागत में कमी का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंचाना होगा, वहीं दूसरी ओर जमाखोरी और कालाबाजारी पर भी कड़ा अंकुश लगाना होगा। तभी महंगाई के मोर्चे पर मिली यह राहत वास्तव में आम आदमी की जेब को राहत दे पाएगी।

मंथन दिनेश शर्मा ‘दिनेश’



संवेदनाओं के शून्य में दम तोड़ते रिश्ते

जि स देश की मिट्टी में श्रवण कुमार की कहानियां रची-बसी हों और बुजुर्गों के अनुभव को किसी भी शास्त्र से ऊंचा दर्जा दिया जाता हो, वहां आज पारिवारिक संस्थाएं तांश के पतों की तरह बिखर रही हैं। विकास की गगनचुंबी इमारतों और चमक-दमक वाली जीवनशैली के बीच हमारे घर भले ही आलीशान हो पाए हों, लेकिन दिल और रिश्ते लगातार सिकुड़ते जा रहे हैं। बड़े-बड़े आंगनों और संयुक्त परिवारों की जगह अब छोटे-छोटे फ्लैट्स और एकल परिवारों ने ले ली है। इस आधुनिक और भागदौड़ भरी जिंदगी ने समाज को एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां हमारे अपने ही बुजुर्ग अनचाहे और अजनबी बनकर रह गए हैं। हर शहर में कुकुरमुते की तरह उगते और आबाद होते ‘वृद्धाश्रम’ हमारी आर्थिक तरक्की का नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक और नैतिक गिरावट का सबसे खोफनाक प्रमाण हैं। आज के युवाओं की जिंदगी करियर, पैसा, तथाकथित ‘ग्राइवेंसी’ और सोशल मीडिया की आभासी दुनिया के इर्द-गिर्द सिमट कर रह गई है।

सफलता की इस अंधी दौड़ में संवेदनाओं, करुणा और कृतज्ञता के लिए जैसे कोई जगह ही नहीं बची है। जिन माता-पिता ने अपनी औलाद को शिक्षित करने, काफिल बनाने और उनके सपनों को पंख देने के लिए अपनी पूरी जिंदगी की जमा-पूँजी और अपनी जवानी दांव पर लगा दी, आज वही औलाद उन्हें अपनी तेज रश्तार जिंदगी में एक बाधा समझने लगी है। आधुनिकता की आड़ में अकसर यह तर्क दिया जाता है कि बुजुर्गों के विचार आज के जमाने से मेल नहीं खाते। इसी खोखली निजता को बचाने के लिए माता-पिता को या तो गांव के किसी जर्जर मकान में उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है या फिर शहर के किसी वृद्धाश्रम में भेज दिया जाता है। विडंबना देखिए कि जहां आज की औलाद अपने माता-पिता के जीवित रहते उन्हें समय दे ही नहीं पाती, वहीं उनके अंतिम समय में भी जब उन्हें विदा करने की बारी आती है, तब भी उनके पास पहुंचने की जहमत नहीं उठा पाती। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई के ओशिवारा इलाके की वह खोफनाक घटना भला कौन भूल सकता है, जहां एक पॉश फ्लैट में 63 वर्षीय आशा साहनी का नरककाल मिला था। उनका इकलौता बेटा अमेरिका में एक बड़े पद पर काम कर रहा था। बेटे ने एक साल से ज्यादा समय तक अपनी मां को फोन तक नहीं किया। मां कब मर गई और कब उसका शरीर गलकर कंकाल बन गया, उस ‘सफल’ बेटे को खबर तक नहीं लगी। क्या ऐसी सफलता का कोई मोल है, जो आपको ईसान से पत्थर बना दे? मथुरा, वृंदावन और काशी की तंग गलियों में ऐसे हजारों बुजुर्ग माता-पिता दर-दर की ठोकर खा रहे हैं, जिन्हें उनके अपने ही तीर्थयात्रा के बहाने वहां लाए और फिर भीड़ में छोड़कर भाग गए। घर लौटकर इन बच्चों ने अपने मोबाइल नंबर बदल लिए ताकि उनके बूढ़े माता-पिता कभी उनसे संपर्क न कर सकें। जो मां अपने बच्चे को भीड़ में उंगली पकड़कर चलना सिखाती है, वही बच्चा जवानी के नशे में उसी मां को एक अनजान भीड़ में रोता-बिलखता छोड़ आता है। इन वृद्धाश्रमों और आश्रमों की खामोशी में अगर आप कभी काम लगाएं तो आपको अनगिनत सिसकियां सुनाई देंगी। वहां रहने वाले बुजुर्ग अकसर दरवाजे की तरफ टटककी लगाए देखते रहते हैं कि शायद आज उनका अपना कोई उन्हें गले लगाने आएगा।

यह विचारणीय हो जाता है कि इस भयानक संकट का समाधान क्या है? हमें अपनी शिक्षा और परवरिश के उस मॉडल पर विचार करना होगा जो केवल डॉलर छापने वाली स्थाथी मशीनें पैदा कर रहा है। बच्चों को बचपन से ही यह सिखाना होगा कि सफलता का असली पैमाना केवल बैंक बैलेंस नहीं, बल्कि एक कृतज्ञ और जिम्मेदार ईसान बनना है। इसके अलावा समाज और सरकारों को मिलकर बुजुर्गों के लिए एक ऐसा मजबूत सपोर्ट सिस्टम तैयार करना होगा जो सिर्फ वृद्धाश्रमों तक सीमित न हो। ‘माता-पिता भरण-पोषण अधिनियम’ जैसे कानूनों को इतनी सख्ती से लागू किया जाना चाहिए कि कोई भी औलाद अपने बुजुर्गों को बेसहारा छोड़ने की हिम्मत न कर सके। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि समय का चक्र बहुत क्रूर और बलवान होता है। आज जो युवा अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम की चारदीवारी में धकेल कर अपनी ‘स्वतंत्र’ जिंदगी का जश्न मना रहे हैं, कल वे भी बुढ़ापे की उसी दहलीज पर खड़े होंगे। जो बीज वे आज बो रहे हैं, कल उन्हें वही फसल कलनी पड़ेगी। इससे पहले कि हमारी यह संवेदनीनता हमें एक ऐसे समाज में तबदील कर दे, जहां ‘ईंसानियत’ सिर्फ शब्दकोश तक सिमट जाए, हमें सामाजिक चेतना को जगाना होगा।

(लेखक शिक्षक एवं स्वतंत्र रसिकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)



मुद्दा प्रमोद भार्गव

देश के दस साल उपराष्ट्रपति रहे हमिद अंसारी ने एक बार फिर ऐसा कटुता भरा बयान दिया है, जो समरसतावादी हिंदू धर्मावलंबियों के लिए आघात देने वाला है । संविधान विशेषज्ञ और लेखक एजी नूरानी की ही 2019 में छपी पुस्तक ‘द आरएसएस: ए मीनेस टू इंडिया’ का हवाला देते हुए अंसारी ने बताया कि ‘जवाहरलाल नेहरू ने चिंता जताई थी कि भारत के लिए साम्यवाद की बजाय हिंदू दक्षिणपंथी सांप्रदायिकता एक बड़ा खतरा है।’ नूरानी पर केंद्रित इस व्याख्यान में अंसारी ने नागरिक राष्ट्रवाद के स्थान पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उभार पर भी चिंता जताते हुए कहा कि ‘ऐसी प्रवृत्तियां चुनावी बहुमत को धार्मिक बहुमत के रूप में पेश कर सकती हैं और नागरिकों को धर्म के आधार पर अलग कर सकती है।’ अंसारी ने इस तरह का बयान कोई पहली बार नहीं दिया है, वह हिंदू-मुस्लिमों के बीच अलगाववाद के बयान देकर उसे उभारने का निरंतर काम कर रहे हैं। उनका कभी भी दोनों संप्रदायों के बीच एकता बढ़ाने वाला भाव देखने में नहीं आया है। जबकि वह बहुसंख्यक हिंदू समाज ही है, जिसने सामाजिक विविधता का ध्यान रखते हुए उनके दस साल के उपराष्ट्रपति पद पर रहने के दौरान कभी अस्वीकार्यता नहीं जताई। इसके पहले अंसारी ने अमेरिका की भरती से भी जिस असहिष्णुता के बढ़ने का राग अलापा था, वह उनकी छद्म धर्मानिरपेक्षता के साथ भारत विरोधी सोच को भी उजागर करता है। यह सोच और इस तरह के बयान शर्मनाक है। यह बयान भी उन्होंने अमेरिका में आयोजित उस संस्था ‘इंडियन-अमेरिकन मुस्लिम आउटसिल’ के कार्यक्रम में दिया, जिस पर भारत में दंगे कराने और पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था आईएसआई के इशारे पर सांप्रदायिक मजहबी एजेंडा आगे बढ़ाने के आरोप हैं। अंसारी की गिनती अब उन पूर्वाग्रही बौद्धिकों में होती है, जिनका धर्मानिरपेक्षता से कोई सरोकार नहीं है। कई देशों में भारतीय राजदूत रहने के बावजूद उनकी संकीर्ण सोच और धार्मिक कट्टरता बार-बार सामने आती रही है। अलंगदूद मुस्लिम विश्वविद्यालय में देश विभाजन के जिम्मेदार जिन्ना की तस्वीर हटाने के विवाद में हस्तक्षेप कर यह कहकर बचाव किया था कि यदि कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल हो सकता है, तब एएमयू में जिन्ना की तस्वीर पर ऐतराज क्यों ? वे कोरोना महामारी के संदर्भ में तब्बीगियों और सांप्रदायिक दंगों के लिए कुख्यात पीएफआई का भी बचाव कर चुके हैं। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार को अंसारी आक्रामक राष्ट्रवाद का प्रतीक बताते हुए कह रहे हैं, कि ‘भारत में धार्मिक बहुमत वाली आबादी को राजनीति में एकाधिकार दे दिया गया है

संकीर्णता अधर्म और विष है

पानी छोटे से पोखर में भी पाया जाता है किन्तु वह प्राय: गन्दा और दुर्गन्ध पूर्ण होता है किन्तु सरोवर में पाया जाना वाला पानी स्वच्छ और अधिक उपयोगी होता है। पोखर छोटा और सरोवर विशाल होता है। मानव का मन भी प्राय: दो तरह का होता है। क्षुद्र और विशाल। क्षुद्र हृदय व्यक्ति बहुत सीमित दायरे में सोचता है। ऐसे व्यक्ति प्राय: कट्टर होते है वे औरों के प्रति असहनशील और ईर्ष्या ग्रस्त होते हैं। सरोवर की तरह उदार हृदय व्यक्ति विशाल दृष्टि कोण लेकर चलते हैं। सहिष्णुता उनकी मुख्य विशेषता होती है। वे अपना ही नहीं सभी का अभ्युदय चाहते हैं। संकीर्ण मनोवृत्ति से दूर रहते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज और मानवता के लिए वरदान स्वरूप होते हैं। धर्म मूलत: , विशाल हृदयी व्यक्ति तैयार करने का काम करता है। मिति में सच्च भूएसु, सर्व भवन्तु सुखिन: , वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे धर्म के मौलिक सूत्र है जिन में संकीर्णता का कोई नामो निशान नहीं है किन्तु जब से धर्म में संप्रदायें प्रबल हुई है। धर्म के स्वरूप को भी संकीर्ण बनाने का प्रयत्न किया जाने लगा। संकुचित मनोवृत्ति वाले व्यक्ति साम्प्रयादिकता के ज्यादा पक्ष घर बने रहे उन्होंने धर्म की सारी व्यवस्थाओं को कट्टरता और संकीर्णता के घरे में बांध लिया। केवल हम और हमारा ये ही ठीक है शेष सभी व्यर्थ है। संकीर्णता की इस भावना ने धर्म की सार्वभौमिकता को तोड़ कर जन जन में भेद भाव की खाई खड़ी कर दी। अन्य धर्म संप्रदायों की बात छोड़िये। जैन धर्म को ही ले लीजिये श्वेताम्बर दिगम्बर स्थानक वासी मूर्ति पूजक तेरा पंथी आदि बड़े बड़े विभाग तो है ही इसमें भी संप्रदाय और उप संप्रदायों का एक विशाल समूह खड़ा है।

संकलित दर्शन



करंट अफेयर

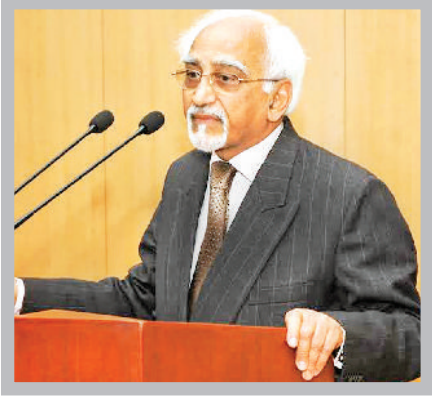
प्रभावशीलता खो रहीं संयुक्त राष्ट्र संस्थाएं : विशेषज्ञ

संयुक्त राष्ट्र की प्रभावशीलता (खासकर युद्ध और शांति के मामलों में) पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। एक प्रमुख भारतीय विशेषज्ञ ने यह बात कही । ओआरएफ अमेरिका के कार्यकारी निदेशक ध्रुव जयशंकर ने कहा कि अब भी कई संस्थाएं महत्वपूर्ण बनी हुई हैं । उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य और विकास के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र के काम को इसका उदाहरण बताया । जयशंकर ने पश्चिम एशिया और यूक्रेन में जारी संघर्षों के बीच संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता पर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा कि विशेष रूप से युद्ध और शांति के मामलों में संयुक्त राष्ट्र की प्रभावशीलता को लेकर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं । उन्होंने कहा, ‘हम ऐसे समय में हैं, जब यह साफ है कि मौजूदा बहुपक्षीय संस्थाएं, केवल संयुक्त राष्ट्र ही नहीं बल्कि अन्य संस्थाएं भी, अपनी उपयोगिता और प्रभावशीलता खोने लगी हैं ।’ जयशंकर ने कहा, ‘कई कारणों से ये संस्थाएं अब भी महत्वपूर्ण हैं और ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां उन्होंने अच्छा काम किया है । उदाहरण के लिए, दुनिया भर में सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं और संयुक्त राष्ट्र महासभा के लिए ‘लैंगिक समानता’ को विभिन्न पक्षों को एक मंच पर लाने वाले विषय के रूप में विकसित करना ।’



मजहबी असहिष्णुता का राग

और इस आधार पर धार्मिक असहिष्णुता को बढ़ावा दिया जा रहा है।' देश के शीर्ष संवैधानिक पदों पर बैठ चुके ऐसे व्यक्ति से यह उम्मीद करना बेमानी है कि उन्होंने दायित्व निर्वहन के दौरान अपनी कार्य-संस्कृति में धर्मानिरपेक्ष मूल्यों का ईमानदारी से निर्वहन किया होगा? गौरतलब है कि मोदी संविधान आधारित लोकतांत्रिक चुनावी प्रक्रिया का पालन कर तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने हैं। हमारे यहां वैचारिक पूर्वाग्रह इतने मजबूत हैं कि इनकी जड़ता किसी भिन्न वैचारिकता को उभरने का अवसर मिलते ही अकसर कुंद और संकीर्ण हो जाती है। अतएव कांग्रेस नेता सलमान खुशीद अपनी



किताब ‘सनराइज ओवर:नेशनहुड इन अवर टाइम्स’ में हिंदुत्व की तुलना क्रूरतम आतंकी संगठन बोको हरम और आईएसआईएस से करके अपनी अंदरूनी मजहबी कटरता को फैलाने में कोई संकोच नहीं करते ? इसी क्रम में आग में घी डालने का काम राशिद अल्वी ने भी किया था। उन्होंने कहा कि जय श्री राम का नारा लगाने वाले सब मुनि नहीं घोर निशाचर होते हैं। हिंदुत्व को गलत तरीके से परोसने वाले यही नेता तब मौन रहते हैं, जब इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजधानी दिल्ली समेत तीन हजार सिखों की हत्या कर दी जाती है और 90 के दशक में पांच लाख से भी ज्यादा हिंदू, सिख, बौद्ध और जैन मतावलंबियों को रातों-रात कश्मीर में मस्जिदों से यह ऐलान कर कि ‘पंडित अपनी बहू-बेटियों को छोड़कर चले जाएं’ खदेड़ दिया जाता है। ये लोग कश्मीर के इस्लामीकरण और केरल एवं पूर्वोत्तर राज्यों के ईसाईकरण पर मौन रहते हैं। दरअसल अंसारी समेत ये सब वे चुके हुए नेता हैं, जो अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए अलगाववादी अजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं। कमोबेश यही रवैया तथाकथित मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों का है। दरअसल, सत्ता परिवर्तन और राष्ट्रवादी

विचारधारा की देश की बहुसंख्यक आबादी में बढ़ती स्वीकार्यता से ये लोग बौराकर वैचारिक धुंधलीकरण की ओर देश को धकेल रहे हैं। यही लोग कांग्रेस, तृणमूल समाजवादी पार्टी के अनर्गल और धर्मानिरपेक्षता विरोधी मसूबों पर ओंठ सील लेते हैं। इसी का परिणाम है कि पश्चिम बंगाल में इकतरफा मुस्लिम वोट बैंक के बूते राज करने वाली ममता बनर्जी का भाजपा ने सूपड़ा साफ कर दिया। दरअसल संप्रदाय बनाम धार्मिक उन्माद की चिंताएं अपनी जगह एक मर्तबा जायज हो सकती हैं, लेकिन बौद्धिक निष्पक्षता समाज में तभी प्रभावी दिखाई देगी, जब अंसारी जैसे उपराष्ट्रपति रह चुके लोग सांप्रदायिक वैमनस्यता से जुड़ी प्रत्येक घटनाक्रम से मुठभेड़ करते दिखाई दें। यह नहीं कि धर्मानिरपेक्ष राजनीतिक व्यवस्था में हिंदू सांप्रदायिकता की काट मुस्लिम सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने अथवा उसे संरक्षण देने में देखी जाए? हमारा संविधान तो वैसे भी केवल हिंदुओं को संरक्षण देने का अधिकार नहीं देता। वह सभी धर्मावलंबियों को आजीविका व प्रगति के समान अवसर देता है। चार पायों पर टिका भारतीय लोकतंत्र इतना मजबूत है कि यहां कोई भी अलोकतांत्रिक नेता या दल लंबे समय तक शासन व्यवस्था में टिका नहीं रह सकता? वैसे भी इतिहास गवाह है कि सांस्कृतिक बहुलतावाद को आसन्न खतरों का सामना तब-तब ज्यादा करना पड़ा है,जब-जब मुसलमानों के हाथों में राजनीतिक सत्ताएं आई हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश समेत जितने भी मुस्लिम देश हैं, सभी में लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित न तो संविधान है और न ही राज्य व्यवस्था ? दरअसल यह सोच उस इतिहास लेखन का परिणाम है, जो इकतरफा होने के बावजूद पढ़ाया जाता रहा है। मार्क्सवादियों ने यह इतिहास भी स्वतंत्र रूप से नहीं लिखा। अंग्रेज इतिहासकारों और मुगल जीवनीकारों के लेखन से उसका अनुसरण किया। यहां तक कि काल विभाजन का स्वरूप भी वही रखा, जो यूरोपीय इतिहासज्ञों ने फूट डालो और राज करो की नीति के तहत किया था। भारतीय इतिहास को यूरोपियनों ने हिंदू काल, मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल में विभाजित किया था। इसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में बैठे मार्क्सवादियों ने बदलकर क्रमश: प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत कर दिया। इस नाम परिवर्तन से इतिहास के कथानकों और घटनाओं में कोई बदलाव नहीं आया। जबकि इतिहास बदलावों का दस्तावेजीकरण और परिवर्तनों की यथास्थिति की व्याख्या होती है।

(लेखक करिश्म फ़तकर हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

ऐसे काम न करें, जिनसे समाज में गलत संदेश जाएं

परमहंस जी अपने शिष्यों को नियमित रूप से उपदेश दिया करते थे। एक दिन जब वे उपदेश दे रहे थे, उस समय एक शिष्य ने उनसे पूछा कि आम लोग तो सभी सुख-सुविधाओं का लाभ उठाते हैं, लेकिन साधु-संतों के लिए इतने कठोर नियम क्यों हैं? परमहंस जी ने शिष्य से कहा कि हमें ऐसे काम करना चाहिए, जिनसे समाज को अच्छा संदेश मिलता है। ये बात साधु-संतों को खासतौर पर ध्यान रखनी चाहिए। आम लोग तो समाज में रहकर अनुशासन के साथ सभी काम कर सकते हैं, लेकिन साधु-संत को हर हाल में गलत कामों से दूर ही रहना चाहिए। साधु-संतों को धन का संग्रह नहीं करना चाहिए, सुख-सुविधा पाने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, संत को क्रोध से भी बचना चाहिए। तभी वे समाज को अच्छा संदेश दे सकते हैं। शिष्य ने फिर पूछा कि साधु-संतों के लिए ही इतने कठिन नियम क्यों हैं? जबकि वे भी इसी समाज का हिस्सा हैं। परमहंस जी ने शिष्य को समझाया कि त्याग का संदेश साधु-संत नहीं देंगे तो और कौन दे सकता है। साधु-संत अपने ज्ञान और कर्म से समाज को श्रेष्ठ जीवन जीने की सीख देते हैं। साधु-संत हमें बताते हैं कि हमें किसी भी चीज का मोह नहीं रखना चाहिए, त्याग की भावना रखेंगे तो कभी दुखी नहीं होना पड़ेगा। परमहंस जी ने साधु-संतों के माध्यम से संदेश दिया है कि अगर हम घर-परिवार और समाज को बेहतर बनाना चाहते हैं तो हमें इसकी शुरुआत खुद से करनी चाहिए।



आयुष्मान भारत

आयुष्मान भारत की शुरुआत इस सोच के साथ की गई थी कि हर भारतीय को बेहतरीन और किफायती हेल्थकेयर मिल सके। आज, 60 करोड़ से ज्यादा लाभार्थियों को सालाना 5 लाख रुपये का हे्थ कवर मिल रहा है, जिससे यह दुनिया की सबसे बड़ी हेल्थकेयर स्कीम बन गई है।

- **नरेंद्र मोदी**, प्रधानमंत्री

वोट चोरी का पर्दाफाश

मैं तीन साल से वोट चोरी का पर्दाफाश कर रहा हूँ। अब खुद चुनाव आयुक्त भी इसे मान रहे हैं। ज़ानेश कुमार ने दावेदार किया है। उन्हें तुरंत इसीफा देना चाहिए और सरकार की गवाह बन जाना चाहिए।

- **राहुल गांधी**, सांसद, कांग्रेस

सरकार किसानों के साथ

कन बाहिरा की वजह से किसान संकट का सामना कर रहे हैं। आज मैंने बाहिरा मिले के मोहावजन ने फसलों को हुए नुकसान का जायजा लिया और महिला किसानों की पेशानियाँ सुनीं। उन्हें भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार किसानों के साथ खड़ी रहेगी।

विपक्ष को हार का डर

ज्यादातर राज्यों में, सत्ता से बाहर हो चुकी कांग्रेस और विपक्षी पार्टियां ऐसी स्थिति में हैं जिसे 'नाच न जाने आंगन देवा' कहा जा सकता है। हर चुनाव से पहले, हार के डर से वे किसी पक्क्या तैयार करने लायते हैं जिससे नतीजों के बाद इज़ाजत बचाई जा सके।

- **केशव प्रसाद मौर्य**, बिटी सीएन, यूपी

हमारा पता

हरिभूमि कार्यालय

नजीक इंडस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक-124001 फोन: 9253681019-20 ई-मेल : haribhoomi@gmail.com वेब-साइट : www.haribhoomi.com

भारतीय नौसेना विदेश में दिखाएगी अपनी ताकत 24वें भारत-फ्रांस समुद्री अभ्यास 'वरुण' में भाग लेने फ्रांस पहुंचा आईएनएस त्रिशूल

भारत और फ्रांस हिंद महासागर से लेकर भूमध्यसागर तक नियमित नौसैनिक अभ्यास करते रहे हैं। फ्रांस का टूलॉन बंदरगाह भूमध्यसागर तट पर स्थित एक प्रमुख नौसैनिक अड्डा है और फ्रांसीसी नौसैनिक संचालन का अहम केंद्र माना जाता है।

अंकारा। यूरोपियन मेडिटरेनियन सिस्मोलॉजिकल सेंटर के मुताबिक गुरुवार को पूर्वी तुर्किये में भूकंप आया, जिसकी तीव्रता 5.1 थी। भूकंप का केंद्र 10 किमी की गहराई में था। यह भूकंप गुरुवार को साउथ-ईस्ट तुर्किये के शहरों में आया। राहत की बात है किसी बड़े नुकसान या किसी को चोट की खबर नहीं आई है। भूकंप सुह 10 बजकर 40 मिनट पर आया था।

A movie poster for the film 'Love Lottery'. In the center, a man with a beard and a light blue polo shirt sits at a dark wooden table. Behind him, a woman in a red and gold sari with a red veil stands with her hands on his shoulders. The background is dark and filled with newspaper clippings, some of which are visible: 'LOVER HUSBAND', 'provided for', 'ed to m', 'SVA GOVAT', 'KILLED', and 'WITH 17'. To the right, a large metal safe is visible, with a small portrait of a man on its door. A lamp hangs above the man, casting light on his face and the table. On the table, there is a glass of water and a small white card. The title 'LOVE LOTTERY' is prominently displayed in the center, with 'LOVE' in white and 'LOTTERY' in blue and red. Below the title, the text 'A MAN FRAMED BY LOVE' and 'DIRECTED BY ARVIND PANDEY' are visible. At the bottom, the names of the cast members are listed: AKSHAY, HELI, KABIR, VIJAYANT, HEMANT, INDIRA, SANTOSH, VIKRAMAN, AGNI, KUMAR, ARSHDEEP, UDESHI, BHAGWALA, DUKHAN SINGH, KUMALI, PANDEY, KACHHAR, SHIRALA, SUDHAK, AGGAR, SAKSHI, SAKSHI. The bottom of the poster also includes production credits: 'PRODUCED BY KULDEEP BHARGAVA "TUSHAR" WRITTEN BY ANKUR KHATTAR', 'DIRECTED BY ARVIND PANDEY', and 'CASTING BY ANKUR KHATTAR'. The bottom right corner features the 'RED EYE' logo and the text 'A RED EYE STUDIO RELEASE'.